कांसुलो नाटक में समसामयिक मूल्यहीनता बोध

वृषाली मान्द्रेकर

कोंकणी साहित्य जगत में पुण्डलीक नायक का विशिष्ट स्थान है। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं, किन्तु नाट्यक्षेत्र में आपको विशेष ख्याति अर्जित हुई है। अभी तक आपकी 'अच्छेव', 'बांबर', 'वसंतोत्सव आनी दायाज' (उपन्यास) 'मुठय', 'पिशांतर', 'अर्दूक' (कथा संग्रह), 'गा आमी राखणे' (कविता संग्रह) 'खण खण माती', 'रक्तखेव', 'राखग', 'सुरींग', 'सूर्यसांवट' (सूरज छांव), 'देमांद', 'मुक्ततांय' (मुक्ति), 'शबै शबै भोजनसमाज', 'पिंपळ पेटला' (पीपल वृक्ष का जलना) 'श्री विचित्राची जात्रा' (अजब लोगों की जात्रा) (प्रकाशित नाटक), 'दिश्ट दौलत', 'तिरंगी चक्राचक्री', 'शिरी रे शिरी अधांतरी', 'दोन कुळा दोन खुळा', 'दिव्या दिव्या दिपत्कार', 'अंता हरी भगवंता', 'आत्मवंचना', 'प्रेमजागर', 'प्रेमयुद्ध', 'कांसुलो', 'जोडखंड' (आदि अप्रकाशित व मंचित नाटक) 'गावधनी गांवकार', चौरंग (साहित्य अकादेमी पुरस्कार 1984) 'आकाशमंच', 'दिगंत' (एकांकी संग्रह) 'रानसुंदरी', 'आळशांक वाग खातलो', 'मनू' (बालसाहित्य), 'काजी नजरूल इस्लाम', 'नानालाल' (अनुवादित साहित्य) आपको विभिन्न पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, सम्प्रति आप गोवा कोंकणी अकादेमी के अध्यक्ष हैं और लेखन कार्य में निरत भी हैं।

उपर्युक्त नाट्यकृतियों में 'कांसुलो' को काफी प्रसिद्धि प्राप्त हुई, जिसका मंचन भी कई बार हो चुका है। वस्तुतः यह लघुनाटक मात्र दो अंकों का है। जिसमें वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक एवं शैक्षणिक स्थितियों पर करारा व्यंग्य है। व्यंग्य की धार पैनी करने के लिए हास्य का सहारा लिया गया है।

'कांसुलो' वर्ष 2003 का बहुचर्चित एवं मंचित नाटक है। किन्हीं कारणों से यह प्रकाशित नहीं हो सका, लेकिन इसकी सीडी बन चुकी है।

'कांसुलो' एक चरित्रप्रधान सशक्त नाटक है, जिसमें आमजीवन की रोजमर्रा जिन्दगी का जीवंत रूप से चित्रित किया गया है। दरअसल इसका कथ्य कुछ इस प्रकार है—कल्पना के पिता विनोमाम मांसरक्षण के इतने शौकीन हैं कि वे इसकी लत में अपनी सारी जायदाद एवं पूंजी कासिम भाई से बकरी एवं काशीनाथ से जंगली सुअर का मांस खाने में गवां चुके हैं। अब इन्हें पैसे का अभाव होते हुए भी कछुए का मांस पसंद आने लगा है, जिसकी पूर्ति उसी गांव का कांसुलो करता है। लगभग दस वर्ष तक मांस का दाम न चुका पाने के बाद कांसुलो विनोमाम की पुत्री कल्पना से शादी करने का प्रस्ताव रखता है। वस्तुतः कल्पना कांसुलो से

शादी नहीं करना चाहती है इसलिए वह अपने प्रेमी बाळा हवलदार से कहती है कि तुम कांसुलो को बकाया पैसा देकर मुझे उससे मुक्त करा लो। बाळा अपने अधिकारों का प्रयोग कर कांसुलो को कछुए पकड़ने के जुर्म में सलाखों के पीछे करने की धमकी देता है।

कालांतर में वह अपना विचार बदलकर कांसुलो को मूर्ख बनाने के लिए यह शर्त रखता है कि हममें से जो बाहर जाकर शराब की बोतल और एक पैकेट सिगार लाकर विनोमाम को दे देगा, तो कल्पना उसकी हो जाएगी। कांसुलो उसकी शर्त स्वीकार कर दोनों चीजें लाकर देता है। बाळा दौड़ने का नाटक कर बीच रास्ते से वापस आ जाता है। विनोमाम और बाळा उसकी मूर्खता पर उसका मजाक उड़ाते हैं। कांसुलो पूर्व निर्धारित शर्त के अनुसार बाळा से कल्पना का हाथ मांगता है तो वह उसे मारना शुरू कर देता है। कांसुलो गुस्से में बाळा को खरी-खोटी सुनाकर उसे मारकर कल्पना को जबरदस्ती अपने घर ले आता है। यहीं पर प्रथम अंक समाप्त हो जाता है।

दूसरे अंक में कांसुलो की घर-गृहस्थी का जिक्र है। वह एक पुराने जीर्ण-शीर्ण मकान में रहता है, जिसके घर में एक कुंआ है। इसी कुंए में कछुओं को पालकर वह अपनी जीविका चलाता है। कांसुलो अंदर से बहुत साफ-पाक है। वह अपने मन की पारिवारिक इच्छाओं को कल्पना के सामने व्यक्त करता है। कल्पना अपने प्रेमी बाळा के विषय में सोचती रहती है। उसे बाळा का इन्तजार था कि वह आएगा और कछुएं का कर्ज चुकाकर उसे यहां से वापस ले जाएगा। इसके साथ ही वह अपने पिता के जिव्हा को भी कोसती है कि पिता के कारण ही उसे आज यह दिन देखना पड़ रहा है।

यह सब सोचकर वह आवेश में कांसुलो को मारने-पीटने लगती है। वह उसकी मार को चुपचाप सहता रहा। कल्पना मारते-मारते बेदम होकर चक्कर खाकर गिर पड़ती है। कांसुलो कल्पना की हालत देखकर घबड़ा जाता है और वह डॉ. शौकीन को जबरदस्ती उठाकर अपने घर ले आता है। डॉ. जांच-पड़ताल के बाद कांसुलो को सुई लाने का आदेश देता है। कल्पना के प्रेम में विह्वल और उसके द्वारा मारे गए तानों को सोचकर कांसुलो अपनी सारी इच्छाओं की पूर्ति के लिए इंजेक्शन का पूरा का पूरा डिब्बा उठा ले आता है। इसके अलावा शिक्षित बनने के लिए वह मास्टर रंगनाथ के साथ पुस्तकें भी ले आता है, ताकि वह पढ़-लिखकर कल्पना के योग्य बन सके। कांसुलो के आने के पूर्व कल्पना को होश आ जाता है और वह डॉक्टर के बुरे आचरण से परिचित होने के कारण उसे दूर हटने के लिए कहती है। कल्पना शौकीन को आगाह करती है कि इंजेक्शन आने पर तुम मुझे हाथ मत लगाना। इस बीच कांसुलो सबकुछ लेकर आ जाता है। डॉक्टर कल्पना से भयभीत और कांसुलो का मान रखने के लिए दूर से ही इंजेक्शन लगाने का नाटक करता है।

तदुपरांत मास्टर रंगनाथ कांसुलो की इच्छानुसार जिसे कि कल्पना ने अक्षरशत्रु और अज्ञानी कहा था उसे दस मिनट के अंतर्गत बुद्धिमान बना देता है। कांसुलो को याद आता है कि कल्पना ने अपनी शादी विधि-विधान से करने की इच्छा व्यक्त की थी इसलिए वह पंडित भरणेश्वर को किसी दूसरे के शादी के मंडप से जबरदस्ती उठाकर ले आता है। यहां आकर डॉ. शौकीन, रंगनाथ और पंडित कल्पना को अपनी योजना में शामिल कर कांसुलो को कुंए में कछुए लाने के उद्देश्य से भेजते हैं और मारना चाहते हैं। थोड़ी देर के बाद उसे मरा हुआ समझकर कल्पना की इज्जत लूटने का प्रयत्न करते हैं। इतने में कांसुलो खुफिये मार्ग से आकर कल्पना की रक्षा करता है। जहां एक तरफ इंस्पेक्टर कश्यप, बाळा हवलदार और विनोमाम कल्पना को कांसुलो से मुक्त करने के लिए आ जाते हैं। वहीं दूसरी तरफ रिपोर्ट लिखवाई जाती है कि कांसुलो डॉक्टर शौकीन, मास्टर रंगनाथ और पंडित भरणेश्वर को जबरदस्ती उठा ले गया है।

इंस्पेक्टर कश्यप द्वारा मामले की पूरी छानबीन की जाती है। तीनों कांसुलो के भय से झूठी गवाही देते हैं। कल्पना उन तीनों के भ्रष्ट चरित्र से परिचित होकर कांसुलो से शादी कर स्वतंत्र एवं आत्मसम्मान की जिंदगी जीने का निर्णय लेती है।

पुण्डलीक नायक की रचनाएं मुख्यतः पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन की विसंगतियों के विविध पक्षों पर केन्द्रित हैं। युवा श्रमिक के प्रेम की भावुकता और मन की निष्कपटता को हम विवेच्य नाटक 'कांसुलो' में कांसुलो नामक पात्र के द्वारा जान सकते हैं। यहां कांसुलो और कल्पना के बीच पहले के प्रेमसंवादों का जिक्र है–

कांसुलो–"हय कपी, हांव तुजो प्रेम करतां कपी

उदकांत बुडोन आसता तेन्ना पसून तकलेंत तुजींच चिंतनां आसता।"

कल्पना–"ते बरें आसा। पूण तुजेकोन लग्न जावन हांव कितें करूं?"

कांसुलो–"तूं कायच करु नाका-हांगा बसोन राव। तुका जाय नाका ते हांव पळयतां। तूं माथ्यार लाकडाचे भोरे घेय नांका। तू कामेरें जावन नडणे-लुवणेक वचों नाका, तूं घरात राणी कशी राव।"

अर्थात् कांसुलो–"हे कपी! मैं तुम्हें दिलोजान से चाहता हूं। जब भी मैं कछुए निकालने के लिए पानी में डुबकी लगाता हूं मैं तुम्हारी याद में डूबा रहता हूं।"

कल्पना–"जो भी है। सब ठीक है। लेकिन मैं यहां तुम्हारे साथ शादी रचाकर इस घर में क्या करूंगी?"

कांसुलो–"तुम कुछ भी मत करो। मेरी इच्छा है कि तुम मेरी आंखों के सामने मेरी रानी बनकर बैठी रहो। तुम्हें जो भी चाहिए मैं लाकर दूंगा। मैं नहीं चाहता कि तुम सिर पर लकड़ियां ढोकर लाओ और मजदूरन बनकर खेत की निराई-गुड़ाई करो।"

लेखक ने सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन में व्याप्त रूढ़ियों, अमानवीय रिश्तों, अन्याय, अत्याचार, विभिन्न षड्यन्त्रों एवं शोषण आदि को भी अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यक्त किया है। इसके अतिरिक्त गोवा मुक्ति के बाद की औद्योगिक समस्याओं एवं मोहभंग की विविध स्थितियों का भी जगह-जगह चित्रण हुआ है।

वर्तमान दौर में राजनीतिक भ्रष्टाचार, मूल्य एवं चरित्रहीनता के कारण हमारी संपूर्ण व्यवस्था चरमरा रही है। प्रस्तुत नाटक में बाळा पात्र के द्वारा लेखक ने इसका खुलासा किया है–

विनोमाम–"हे कितें?"

बाळा–"पोती धवन बाजारात अशी एक पासय मारली कोणें-कोंणे कितें तातूंत वडयला। कोणे टमाट, कोणे बटाट जाल्यार कोणे कांदे।"

विनोमाम–"तें एक बरें करता लूं।"

बाळा–"नाजाल्यार हवालदार जाला ताचो उपेग कितें? आनी हवालदार कितें फुक्या सवाय जालां? मंत्र्याकडल्यान विकतो घेतला पोस्ट। आता ते ना म्हणून बासूं। तांची म्हणून चूक ना।"

विनोमाम–"कसली चूक ना म्हणटा तूं?"

बाळा–"तांचे मंत्र्याचे म्हणणे–आमी लोकांकडल्यान मतां फुकट घेता? एक-एक मत हजारांक पडटा। मृणटकूच आभी पोस्ट फुकट कित्याक दिवपाचे?"

विनोमाम–"बरोबर"

बाळा–"गजाल सांगताली ती मंत्र्यांची न्हय चोरांची।"

विनोमाम–"दोनूय एकूच न्हय तें?"

अर्थात विनोमाम–"यह क्या है?"

बाला–"पोती लेकर मैंने बाजार में एक चक्कर लगाया तो इसमें सब्जीवालियों ने प्याज, आलू, टमाटर आदि डाले हैं।"

विनोमाम–"यह तो तुम बहुत अच्छा करते हो।

बाळा–"हवलदार होने का क्या मतलब? क्या हम हवलदार मुफ्त में बने हैं? अरे! मंत्री महोदय से मैंने यह पद खरीदा है। उनकी भी गलती नहीं है। वे भी बेचारे एक-एक मत खरीदकर ही तो चुनाव जीतते हैं। इतना पैसा खर्च करते हैं तो आएगा कहां से?"

इसके आगे नेता और चोर को समान बताते हुए शासन तंत्र तथा भ्रष्टाचार को उद्घाटित किया गया है।

लेखक ने पुलिस विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं उनकी सामाजिक शोषण की नीति को भी जगह-जगह दर्शाया है। साहित्य एवं मीडिया के द्वारा भी इनके काले कारनामों का जिक्र प्रायः पढ़ने और सुनने को मिलता है। प्रस्तुत नाटक में भी बाळा हवलदार की शोषण-नीति को इस प्रकार उजागर किया गया है।

बाळा हवलदार बाजार में इधर-उधर चक्कर लगाकर डंडा फटकाता है और आवश्यकतानुसार सब्जीवालों से आलू-प्याज-टमाटर आदि की मांग करता है। इतना ही नहीं दूध, मछली, शराब भी हर रोज उसके घर पहुंचती हैं। सामान्यतौर पर पुलिस विभाग के लोग जीवन की रोजमर्रा की चीजों को मुफ्त में खाने के आदी हो गए हैं। 'कांसुलो' को 'कछुआ' पकड़ने के जुर्म में हवलदार बंदी बनाना चाहता है, लेकिन जब वह कछुओं को मुफ्त में घर पहुंचाने की बात करता है, तो हवलदार उसे छोड़ देता है।

प्रस्तुत नाटक में लेखक ने रंगनाथ (अध्यापक), शौकीन (डाक्टर), भरणेश्वर (पंडित) के नैतिक विहीन भ्रष्टाचारी चरित्र का पर्दाफाश किया है।

जहां रंगनाथ अपनी वासना की भूख शांत करने के लिए लड़कियों की अतिरिक्त कक्षाएं चलाकर उनसे छेड़खानी

करता है, वहीं डॉक्टर शौकीन युवा सुंदर बीमार लड़कियों को बीमारी की जांच-पड़ताल के बहाने अपने कमरे में ले जाकर नाजायज हरकतें करता है। नैतिकता की हदों को पार करता हुआ अधेड़ उम्र का भरणेश्वर अपनी भांजी श्यामल को बुरी नजरों से देखता है।

यहां कल्पना और कांसुलो के संवाद के माध्यम से कतिपय भ्रष्ट चरित्रों के उदाहरण प्रस्तुत हैं।

कल्पना—"म्हाका हांगा हाडलें तेंय बरे केलें। पूण म्हजेबरोबर हया असल्या मनशांक तुवें हांगा कित्याक हाडले? हो बायलांचो शौकीन। हो रंगढंगी रंगनाथ तांचेपासून हांव पळून गेल्लें। घाणीपासून पयस गेल्लें। तुवें घाणूच हाडून परत म्हजेमुखार दवरली। आनी भटजींक कितें तुटपाण आसा? अखेर बकजबरीनूच हाडला न्हय तुवें भटाक। बरोसो शुद्ध बाह्मण हाडपाचो।"

अर्थात् कल्पना—"मुझे यहां लाकर तुमने उपकार किया लेकिन इस प्रकार के भ्रष्टचरित्र वालों को क्यों ले आए। मैं डॉक्टर के बुरे व्यवहार को देख चुकी हूं। समाज के इन गंदे आचरण करने वाले लोगों के कारण न तो मैं पढ़ाई जारी कर सकी और न ठीक ढंग से इलाज ही कर सकी। क्या तुम्हें और कोई अच्छा पंडित नहीं मिला जो तुम इसे यहां ले आए हो?"

लेखक ने षड्यंत्रकारी, स्वार्थी, आचरणभ्रष्ट चरित्रों के साथ थानेदार कश्यप जैसे सच्चे एवं ईमानदार चरित्र को भी दर्शाया है। यहां कश्यप मामले की तह तक जाकर 'कांसुलो' को निर्दोष साबित करता है और कछुआ पालने के लिए उसे सजा नहीं देता।

विवेच्य नाटक की भाषा सरल एवं पात्रानुकूल है। पंडित भरणेश्वर एवं अन्य पात्रों की भाषा में फर्क नजर आता है, अन्य पात्र शुद्ध कोंकणी में वार्तालाप करते हैं तो भरणेश्वर मराठी मिश्रित कोंकणी में बातचीत करता है। गोवा महाराष्ट्र का पड़ोसी राज्य होने के कारण यहां की कोंकणी भाषा पर उसका अधिक प्रभाव है। अभी भी उत्तर गोवा के समाज में मराठी भाषा का प्रभाव अधिक है। अधिकांश लोगों की बोल-चाल की भाषा भी मराठी है। यहां के धार्मिक कार्य मराठी भाषा में भी संपन्न होते हैं। प्रस्तुत नाटक में इस प्रभाव को देखा जा सकता है।

भरणेश्वर—"सारखे काय फारीक करणां तूं? अणी दाम दुप्पट फारीक केलेस म्हणून भी असली बेकायदेशीर कामां करणां असे वाटतें तुज? आता नवरी पळवून आणलीस तरी दोगांची संमती असल्यास प्रश्न वेगळा। आजकाल तसें चालतें। आयच्या देवांनी सुहदां हेंच केलें नव्हे? आता लग्न करुन मग तेर्म करव्या हरकत नाय।'

अर्थात्—"तुम मुझे क्या दोगे? और ज्यादा पैसे दिया तो भी मैं गैरकानूनी काम नहीं करूंगा। अब लड़की को भगाकर लाए हो तो ठीक है। यदि दोनों की मर्जी से शादी हो रही है तो कोई बात नहीं। यह कोई नई बात नहीं है, क्योंकि हमारे देवताओं ने भी तो इस प्रकार की शादी रचाई है? तुम चिंता मत करो पहले अपना ब्याह रचाओ, बाद में पंजीकरण कर लेना।

यह नाटक संवाद की कसौटी पर खरा उतरता है। वाक्य छोटे-छोटे एवं सरल हैं। जोकि हमारी रोजमर्रा की जिंदगी से जुड़े हैं। जैसे कि—'सुंगटा दिवची पुज पोय दाखोवची न्हय'—अर्थात्—झिंगा मछली देना लेकिन तालाब मत दिखाना।

नाट्यतत्वों के आधार पर हम कांसुलो को एक सशक्त नाटक कह सकते हैं। इसकी सशक्तता का परिचय हमें इसके 120 बार की मंचीयता से मिल जाता है। मंचीयता ही नाटक की वास्तविक कसौटी होती है। विचार, भाव-भाषा, मंचन आदि की दृष्टि से इस नाटक को गोवा में काफी प्रसिद्धि मिली। वस्तुतः इसमें जगह-जगह वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक व्यवस्था पर चुटकी ली गई है। इसके साथ ही इसमें व्यंग्य की मीठी धार भी मौजूद है।

अंततः मैं यह कहना चाहूंगी कि 'कांसुलो' नाटक में समसामयिक, सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन में हो रहे मानवीय मूल्यों के अधोपतन को चित्रित किया गया है।